

शास्त्रार्थ परम्परा



एस.एस. उपाध्याय

पूर्व जनपद न्यायाधीश/पूर्व विधिक परामर्शदाता

मा० राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

निवास: ३०१ए, कावेरी अपार्टमेन्ट्स, गोमती नगर विस्तार, लखनऊ

मा० ९४५३०४८९८८

ई-मेल: ssupadhyay28@gmail.com

शास्त्रार्थ परम्परा भारत की प्राचीन अकादमिक परम्परा रही है जिसका उद्भव वैदिक युग में हुआ था। 'वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः' के सिद्धान्त से शास्त्रार्थ परम्परा की व्युत्पत्ति हुई थी। वैदिक युगीन विद्वानों का मत था कि किसी विषय पर परस्पर जितना संवाद एवं विमर्श होगा, उस विषय का गूढ़ पक्ष उतना ही स्पष्ट होता जाएगा। इसी धारणा से आचार्यगण व विद्वतगण आपस में जीवन और जगत के गूढ़ विषयों पर विमर्श अथवा परिचर्चा के कार्यक्रम आयोजित करते थे जिसे कालान्तर में शास्त्रार्थ कहा जाने लगा। शास्त्रार्थ का विषय प्रारम्भ में पराविद्या अर्थात् ब्रह्म विद्या हुआ करती थी परन्तु कालान्तर में उसमें अपरा विद्या अर्थात् सांसारिक विद्याएं भी सम्मिलित कर ली गयीं। अनेक नए-नए ज्ञान का सृजन वस्तुतः प्राचीन समय में इसी शास्त्रार्थ पद्धति से ही हुआ। कुल 108 उपनिषदों में से 'प्रश्नोपनिषद' इसका उल्लंघन उदाहरण है जिसमें शिष्यगण आचार्य से दर्शन पर तथा सांसारिक विषयों पर भी अनेकों प्रश्न करते हैं और आचार्य उनका उत्तर देते हैं। शास्त्रार्थ की यह परम्परा पूरी तरह मर्यादा, गंभीरता, अनुशासन एवं शालीनता के दायरे में होती थी जिसमें दम्भ, पाखंड अथवा पांडित्य के अनुचित व असंगत प्रदर्शन के लिए कोई स्थान नहीं होता था अपितु शास्त्रार्थ का एकमात्र आशय सत्य पर पहुँचना होता था। शास्त्रार्थ में पराजित हो जाने वाले विद्वान का विजेता अथवा विद्वत सभा द्वारा लेषमात्र भी उपहास व अपमान नहीं किया जाता था अपितु पराजित होने वाला बहुधा स्वयं विपक्षी के वैदुष्य की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए उसकी विजय और अपनी पराजय की स्वयं घोषणा करता था और विजयी हुआ विद्वान विपक्षी को अत्यंत सम्मान देते हुए उसकी प्रशंसा करता था। शास्त्रार्थ का इतना स्वस्थ व गरिमापूर्ण दृष्टांत सनातनधर्मियों से इतर मानव सभ्यता के सम्पूर्ण ज्ञात इतिहास में अन्य किसी संस्कृति व सभ्यता में देखने व सुनने को नहीं मिलता है।

प्राचीन समय में शास्त्रार्थ की प्रक्रिया आदि पर विद्वानों के कई ग्रंथ मूलभ थे। उनमें से कतिपय ग्रंथ कालान्तर में तथा कुछ बौद्धकाल में विलुप्त हो गए और जो शेष बचे थे उन्हें 11वीं शताब्दी में विदेशी आक्रान्ता बख्तियार खिलजी ने भारतीय गुरुकुलों, आश्रमों तथा नालन्दा व तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों को जला देने से उनमें रखी गयी शास्त्रार्थ की मूल पांडुलिपियाँ भी नष्ट हो गयीं। संस्कृत वांगमय में अभी भी उपलब्ध ऋषि गौतम के न्यायसूत्र, उपनिषदों विशेषकर प्रश्नोपनिषद, आयुर्वेद के ग्रंथ चरकसंहिता व सुश्रुत संहिता एवं बौद्ध ग्रन्थों में शास्त्रार्थ की प्रक्रिया एवं उसके नियमन के अनेकोनेक प्रमाण मिलते हैं। उपलब्ध शास्त्रों में उल्लिखित प्रक्रिया एवं दिशा-निर्देशों के अनुसार शास्त्रार्थ निम्नांकित तीन प्रकार के होते हैं:

1. वाद (Ideal Debate)
2. जल्प (Bad Debate)
3. वितण्ड (Wrangling or Illegitimate Debate)

वाद: शास्त्रार्थ की वाद पद्धति में वक्ता प्रमाणों के साथ अपने मत की स्थापना करता है और विपक्षी के मत अथवा तर्कों का खण्डन करता है। शास्त्रार्थ की इस परम्परा को आदर्श माना जाता है।

जल्प: जल्प पद्धति के शास्त्रार्थ में वक्ता प्रमाणों के बिना वैध, अवैध, उचित अथवा अनुचित तर्कों के सहारे अपने मत की स्थापना करता है और विपक्षी के मत का खण्डन करता है। जल्प पद्धति को विद्वान उचित नहीं मानते हैं। जल्प पद्धति के शास्त्रार्थ का ज्वलंत स्वरूप आज भी देखने को मिलता है। न्यायालयों में विधिवेत्ता जो बहस एवं तर्क प्रस्तुत करते हैं वह कदाचित जल्प कोटि का ही एक विधिक शास्त्रार्थ होता है।

जल्प पद्धति का एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ त्रेतायुग में राजा जनक के दरबार में महर्षि याज्ञवल्क्य तथा विदुषी गार्गी के मध्य संपन्न हुआ था जिसका विस्तृत विवरण वृहदारण्यक उपनिषद में मिलता है। राजा जनक ने सबसे बड़े ब्रह्म ज्ञानी की खोज करने के उद्देश्य से दूर-दूर से विद्वानों, ऋषियों, मुनियों, आचार्यों के बीच शास्त्रार्थ के प्रयोजन से एक सभा बुलाई। जनक ने 1000 गायों की सींगों में सोना मिठ्ठा दिया और यह घोषणा की कि जो विद्वान शास्त्रार्थ में अन्य समस्त विद्वानों को ब्रह्म विद्या में पराजित कर देगा उसे समस्त 1000 गायें दान स्वरूप दे दी जावेंगी। विद्वत सभा में उपस्थित ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्यों से कहा कि इन समस्त 1000 गायों को तुम लोग ले जाकर अपने आश्रम में

बांध दो। याज्ञवल्क्य की यह बात सुनकर अन्य विद्वान् क्रुद्ध हो गये और गायें ले जाने से पहले उनसे शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। एक तरफ महर्षि याज्ञवल्क्य अकेले थे तो दूसरी तरफ विद्वानों की बड़ी सभा। तय हुआ कि समस्त विद्वानों की ओर से उदालक तथा अश्वल नामक दो विद्वान् याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करेंगे। याज्ञवल्क्य ने सहज ही उदालक और अश्वल को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया। उसी सभा में उस युग की श्रेष्ठ ब्रह्मविदुषी गार्गी भी उपस्थित थीं। गार्गी उठ खड़ी हुई और याज्ञवल्क्य को उनसे शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से ब्रह्म विद्या संबंधी अनेकों दार्शनिक प्रश्न पूछे। याज्ञवल्क्य ने सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया। तब गार्गी ने याज्ञवल्क्य से अतिप्रश्न पूछने शुरू कर दिये। शास्त्रार्थ पद्धति में वक्ता से बार-बार एक ही विषय पर प्रश्न पूछने को अतिप्रश्न कहा जाता है और इसे शास्त्रार्थ की आदर्श पद्धति अर्थात् वाद पद्धति के विरुद्ध माना जाता है। वृहदारण्यक उपनिषद में आये कथानक के अनुसार गार्गी द्वारा याज्ञवल्क्य से पूछे गये अतिप्रश्न तथा याज्ञवल्क्य द्वारा दिये गये उनके उत्तर नीचे दृष्टव्य हैं:

गार्गी के प्रश्न

1. जल कहाँ हैः
2. अन्तरिक्ष लोक कहाँ हैः
3. गन्धर्व लोक कहाँ हैः
4. आदित्य लोक कहाँ हैः
5. चन्द्रलोक कहाँ हैः
6. नक्षत्र लोक कहाँ हैः
7. देवलोक कहाँ हैः
8. इन्द्रलोक कहाँ हैः
9. प्रजापति लोक कहाँ हैः
10. ब्रह्मलोक कहाँ हैः

याज्ञवल्क्य के उत्तर

- | | |
|-------------------------------------|--------------------------------|
| अन्तरिक्ष लोक में | गन्धर्व लोक में |
| आदित्य लोक में अर्थात् सूर्यलोक में | चन्द्रलोक अर्थात् पितृ लोक में |
| नक्षत्र लोक में | देवलोक में |
| इन्द्रलोक में | प्रजापति लोक में |
| ब्रह्मलोक में | |
| ? | |

गार्गी द्वारा पूछे गये उपरोक्त 10वें अति प्रश्न से क्रुद्ध होकर याज्ञवल्क्य ने कहा: गार्गी तुम्हारे द्वारा इस प्रकार के अति प्रश्न करने से तुम्हारा सिर धड़ से अलग होकर गिर जाएगा। तब गार्गी ने याज्ञवल्क्य से अपनी पराजय स्वीकार करते हुए स्वयं विद्वत् सभा में खड़े होकर घोषणा की कि महर्षि याज्ञवल्क्य से विजयी हुए और उनसे बड़ा ब्रह्मज्ञानी संसार में कोई नहीं है।

वितण्ड: वितण्ड पद्धति के शास्त्रार्थ में वक्ता बिना किसी प्रमाण के तथा उचित तर्क के अपने मत को प्रकट करता है और विपक्षी के प्रमाण आधारित तर्क संगत मतों का खण्डन करता है। वितण्ड विधा में वक्ता कुतकों के सहारे विपक्षी पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करता है। वितण्ड पद्धति के शास्त्रार्थ में वक्ता वस्तुतः विवाद अथवा झगड़ा करता है।

वितण्ड पद्धति के शास्त्रार्थ का ज्वलंत उदाहरण आठवीं शताब्दी में आदिशंकराचार्य तथा उस युग के प्रसिद्ध शास्त्रविद् मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती के बीच संपन्न हुआ शास्त्रार्थ दृष्टव्य है। शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ की यह शर्त रखी गयी थी कि शास्त्रार्थ में जो पराजित हो जाएगा वह विपक्षी का शिष्य और सन्यासी बन जाएगा। मंडन मिश्र शास्त्रार्थ में आदिशंकराचार्य से पराजित हो गये परन्तु उनकी पत्नी उभय भारती मंडन मिश्र को शंकराचार्य का शिष्य और सन्यासी नहीं बनने देना चाहती थीं। उभय भारती ने शंकराचार्य जी को उनसे शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी और कहा कि मेरे पति तभी घर छोड़कर सन्यासवृत्ति धारण करेंगे और आपके शिष्य बनेंगे जब पहले आप मुझे शास्त्रार्थ में पराजित कर देंगे। शंकराचार्य इसके लिए तैयार हो गये। विद्वतसभा पुनः बैठी। शंकराचार्य और उभय भारती के बीच शास्त्रार्थ प्रागम्भ हुआ। उभय भारती जब शंकराचार्य जी के तर्कों और प्रमाणों से निरुत्तरित और पराजित हो गई तो उन्होंने छल के सहारे शंकराचार्य जी को पराजित करने का मन बनाया। उभय भारती ने शंकराचार्य जी से कामशास्त्र पर एक के बाद एक कई प्रश्नों की बौछार कर दी। आदिशंकराचार्य बालब्रह्मचारी और बालसन्यासी थे, उन्हें कामशास्त्र का कोई ज्ञान और अनुभव नहीं था। कामशास्त्र की विविध कलाओं पर पूछे गये प्रश्नों में से एक का भी उत्तर शंकराचार्य नहीं दे सके। उभय भारती के पति मंडन मिश्र ने उभय भारती को मना भी किया कि एक बालसन्यासी से कामशास्त्र एवं उसकी विभिन्न कलाओं पर प्रश्न किया जाना अनुचित है परन्तु उभय भारती नहीं मानी और हठ किया कि या तो शंकराचार्य कामशास्त्र पर पूछे गये मेरे प्रश्नों का उत्तर दें अन्यथा मुझसे अपनी पराजय स्वीकार करें। शंकराचार्य ने अनुरोध किया कि उन्हें एक माह का समय दिया जावे और तब तक के लिए यह शास्त्रार्थ स्थगित कर दिया जावे, एक माह बाद वह पुनः शास्त्रार्थ के लिए उपस्थित होंगे और उभय भारती द्वारा कामशास्त्र एवं उसकी विविध कलाओं पर पूछे गये उनके सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे। विद्वत सभा ने शास्त्रार्थ एक माह के लिए स्थगित कर दिया। शंकराचार्य शास्त्रार्थ स्थल को छोड़कर जब दुःखी मन से अपने शिष्यों सहित एक जंगल से होकर जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि जंगल में शिकार करने के लिए आया

हुआ एक युवा राजकुमार ताजा-ताजा मरा पड़ा है। शंकराचार्य उसके शव के पास जाकर बैठ गये और अपनी प्रबल योगमाया से अपने प्राणों को अपने शरीर से निकालकर अपना मृत शरीर शिष्यों की सुरक्षा में सौंप दिया और स्वयं परकाया प्रवेश की यौगिक क्रिया द्वारा मृत राजकुमार के शरीर में प्रवेश कर गये तथा जंगल से राजमहल में वापस आये। राजमहल में शंकराचार्य एक माह तक राजकुमार के शरीर में रहकर रानियों के सहवास में रहे और कामशास्त्र की समस्त कलाओं में दक्ष होकर वापस उभय भारती से शास्त्रार्थ के लिए पहुँचे। शास्त्रार्थ मण्डप सजाया गया, उभय भारती और शंकराचार्य में शास्त्रार्थ विद्वानों के समक्ष प्रारम्भ हुआ। इस बार कामशास्त्र पर उभय भारती द्वारा पूछे गये समस्त गूढ़ प्रश्नों का शंकराचार्य जी ने बहुत ही दक्षता और चातुर्य के साथ सटीक उत्तर दिया और अंत में उभय भारती निरूत्तरित होकर पराजित हो गयी। उभय भारती और आदिशंकराचार्य के मध्य संपन्न हुआ यह शास्त्रार्थ वितण्ड कोटि के शास्त्रार्थ का ज्वलंत उदाहरण है।

इतिहास में संपन्न हुए कतिपय प्रसिद्ध शास्त्रार्थ नीचे दृष्टव्य हैं:

1. याज्ञवल्क्य-गार्गी शास्त्रार्थ
2. अष्टावक्र- जनक शास्त्रार्थ
3. अंगद-रावण संवाद
4. लक्ष्मण-रावण संवाद
5. काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद
6. यमराज-नचिकेता संवाद
7. शिव-पार्वती संवाद
8. श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद
9. यक्ष-युधिष्ठिर संवाद
10. युधिष्ठिर-भीष्म संवाद
11. धृतराष्ट्र-विदुर संवाद
12. आदिशंकराचार्य-मंडन मिश्र शास्त्रार्थ
13. आदिशंकराचार्य – उभय भारती शास्त्रार्थ
14. कुमारिल भट्ट – बौद्धभिक्षु शास्त्रार्थ
15. महर्षि दयानन्द सरस्वती – अनेक विद्वानों से शास्त्रार्थ

16. कालिदास- विद्योतमा शास्त्रार्थ

17. जगद्गुरु कृपालु महाराज- काशी विद्वत् परिषद शास्त्रार्थ

18. दिनांक 28.02.2021 को गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ स्थित कावेरी परिसर में शास्त्रों के 20 विद्वानों के मध्य निर्मित कुल 05 टीमों के बीच संपन्न शास्त्रार्थ। इस शास्त्रार्थ हेतु चयनित किये गये प्रश्नों तथा शास्त्रार्थ हेतु तैयार की गयी नियमावली सुधी पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही है:

शास्त्रार्थ कार्यक्रम-2024

एवं

राम कालीन शासन प्रणाली पर लिखी गयी पुस्तक 'GLOBAL RAM' का लोकार्पण

दिनांक: 03.03.2024, रविवार

समय: 09.00 से 04.00 बजे अपराह्न तक

स्थान: राम कथा पार्क, नया घाट, निकट लता चौक, अयोध्या

शास्त्रार्थ के विषय

- “जीवो ब्रह्मैव नापरः” (ब्रह्म और जीव दो नहीं अपितु एक ही हैं) की व्याख्या वेदों एवं उपनिषदों के उद्धरणों के साथ कीजिए।
- श्रेय, प्रेर्य, पाप, पुण्य, स्वर्ग, नरक की शास्त्रीय अवधारणा का विवेचन वेदान्त दर्शन के परिप्रेक्ष्य में कीजिए।
- प्रवृत्ति एवं निवृत्ति की दार्शनिक अवधारणा को प्रस्थानत्रयी (उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र व भगवद्गीता) के आलोक में व्याख्यायित कीजिए।
- धर्म एवं अध्यात्म के परस्पर सम्बन्ध एवं विभेद को शास्त्रों के उद्धरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
- ‘पुरुषार्थ चतुष्टय’ की अवधारणा को मानव जीवन के परम लक्ष्य के परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित कीजिए।
- तप, जप, पूजा, उपासना, यज्ञ, तीर्थ गमन, कर्मकाण्ड आदि को जीवन की सार्थकता की दृष्टि से शास्त्रों के उद्धरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
- साकार और निराकार ब्रह्म तथा उनसे सम्बन्धित उपासना पद्धतियों को शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट कीजिए।
- ‘कर्म फल सिद्धान्त, सकाम एवं निष्काम कर्म’ की व्याख्या सुसंगत शास्त्रीय उद्धरणों सहित कीजिए।
- वर्ण एवं जाति की उत्पत्ति व आवश्यकता पर प्रकाश डालिए। वर्तमान में ‘जाति’ की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट कीजिए।
- ‘अष्टांग योग’ के अभ्यास द्वारा ‘कैवल्य प्राप्ति’ की अवधारणा को व्याख्यायित कीजिए।
- भक्ति एवं ज्ञान के परस्पर सम्बन्ध एवं विभेद को शास्त्रों के उद्धरणों सहित व्याख्यायित कीजिए।
- आत्मज्ञान, भगवत्‌प्राप्ति एवं मोक्ष की अवधारणा को वेदों एवं उपनिषदों के उद्धरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

13. विश्व की वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत भारत की प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का कितना अंश किस प्रकार भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेशित किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
14. रामकालीन समाज की शासन एवं न्याय प्रणाली पर प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के उद्धरणों सहित प्रकाश डालिए।
15. रामकालीन समाज में स्त्रियों के अधिकारों, उनकी सामाजिक स्थिति, कुटुम्ब प्रबन्धन में उनकी भूमिका, उनके आर्थिक स्वावलम्बन एवं राजसत्ता के प्रबन्धन में उनकी भूमिका पर उद्धरणों सहित प्रकाश डालिए।
16. आदर्श 'कुटुम्ब प्रबन्धन' एवं 'समाज प्रबन्धन' में श्रीराम के आदर्शों की भारत की वर्तमान लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता व आवश्यकता पर उद्धरणों सहित प्रकाश डालिए।

नोट: शास्त्रार्थ के प्रयोजन से कुल 8 टीमें बनेंगी। प्रत्येक टीम को उपरोक्त 16 प्रश्नों में से केवल 2 प्रश्न चुनने हैं और उन्हीं 2 प्रश्नों पर ही उन्हें अपनी तैयारी करनी है और बोलना है।

शास्त्रार्थ कार्यक्रम-2024

दिनांक: 03.03.2024, रविवार

समय: 09.00 से 04.00 बजे अपराह्ण तक

स्थान: राम कथा पार्क, नया घाट, निकट लता चौक, अयोध्या

शास्त्रार्थ के नियम

- (1) शास्त्रार्थ में कुल 08 टीमें प्रतिभाग करेंगी।
- (2) शास्त्रार्थ हेतु चयनित किये गये विषयों/प्रश्नों की सूची तथा शास्त्रार्थ के नियमावली की कॉपी प्रतिभाग करने वाली टीमों को शास्त्रार्थ की तिथि से पर्याप्त दिवस पूर्व तैयारी करने हेतु मेल अथवा अन्य साधनों से प्रेषित कर दी जावेगी।
- (3) शास्त्रार्थ की अवधि 04.30 घण्टे (साढ़े चार घण्टे) होगी।
- (4) शास्त्रार्थ में प्रतिभाग करने वाली प्रत्येक टीम में न्यूनतम 2 तथा अधिकतम 4 सदस्य होंगे।
- (5) लॉटडी/पर्ची के माध्यम से टीमों को टीम क्रमांक 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 नाम दिया जाएगा।
- (6) कुल निर्धारित 16 प्रश्नों में से प्रत्येक टीम द्वारा अपने लिए किन्हीं 02 प्रश्नों का चयन करके शास्त्रार्थ की तिथि से पूर्व उसकी सूचना आयोजक को देनी होगी।
- (7) कुल 8 टीमों में से एक टीम विज्ञा गृहस्थ संतो की भी होगी।
- (8) यदि अपने द्वारा पूर्व में चयन किये गये किसी प्रश्न को कोई टीम अपने लिये असुविधाजनक पाती है तो उसे यह विकल्प होगा कि वह शास्त्रार्थ स्थल पर शेष अन्य टीमों में से किसी एक टीम से उक्त प्रश्न को आपस में बदल सकते हैं।
- (9) प्रत्येक टीम को प्रवर्तित विषय/प्रश्न पर अपने विचार रखने के लिए अधिकतम 15 मिनट का समय दिया जावेगा। 13 मिनट बीतने पर पहली घण्टी, 14 मिनट पर दूसरी घण्टी तथा 15 मिनट पूरे होने पर तीसरी घण्टी बजेगी और उसके 30 सेकेण्ड के अन्दर वक्ता को अनिवार्य रूप से अपना वक्तव्य समाप्त करना होगा। टीम/वक्ता के बोल लेने के पश्चात् 05 मिनट का समय दूसरी टीमों को तथा श्रोतागण को वक्ता/टीम से प्रश्न पूछने और उसका उत्तर देने के लिये दिया जावेगा।
- (10) वक्ता के बोलने के दौरान उनकी टीम का अन्य सदस्य भी नियत समयावधि 15 मिनट में ही अपनी बात रख सकेगा, अर्थात् प्रत्येक टीम को बोलने के लिए कुल 15 मिनट का ही समय मिलेगा।
- (11) एक वक्ता के बोलने के दौरान दूसरा नहीं बोलेगा। कोई स्पष्टीकरण माँगने के लिए अन्य टीम के सदस्य हाँथ उठाकर संचालक मण्डल की अनुमति से वक्ता से प्रश्न कर सकेंगे।
- (12) संचालक मण्डल की अनुमति से श्रोताओं द्वारा वक्ता से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए प्रश्न किया जा सकेगा परन्तु स्पष्टीकरण से सन्तुष्ट नहीं होने पर प्रश्नकर्ता को वक्ता से पुनः प्रश्न अथवा अति प्रश्न करने की अनुमति नहीं होगी।
- (13) वक्ता के बोलने के पश्चात् निर्णायिक मण्डल अपनी टिप्पणी दे सकेगा और स्पष्टीकरण के लिए प्रश्न भी कर सकेगा।
- (14) प्रत्येक विषय/प्रश्न पर टीम/वक्ता के बोल लेने के पश्चात् संबंधित विषय/प्रश्न के निष्कर्ष को सिर्केंड किया जावेगा जिसे निर्णायिक मण्डल शास्त्रार्थ के अंत में पढ़कर श्रोताओं को सुनायेंगे ताकि श्रोताओं को ज्ञान हो सके कि शास्त्रार्थ के लिए देखे गये प्रत्येक विषय/प्रश्न पर विद्वानों द्वारा अपना-अपना वक्तव्य रखने के पश्चात् उसका अंतिम निष्कर्ष क्या निकला।
- (15) वक्ताओं को निर्णायिक मण्डल से प्रश्न पूछने, उनके कथनों का खण्डन करने अथवा उनसे वाद-विवाद में पड़ने की अनुमति नहीं होगी।
- (16) शास्त्रार्थ की भाषा हिन्दी होगी।
- (17) संस्कृत भाषा के वाक्य अथवा शास्त्रों से श्लोक आदि का उद्धरण देने पर वक्ता को उसका हिन्दी में अन्वाद/अर्थ बताना होगा।

- (18) शास्त्रार्थ के दौरान शेस्ट-ओ-शायरी बोल्यो की अनुमति नहीं होगी।
- (19) शास्त्रार्थ के प्रतिभागी एवं श्रोतागण श्रेष्ठ बुद्धिजीवी वर्ग होंगे। कहने की आवश्यकता नहीं है कि शास्त्रार्थ के दौरान वक्ताओं को शालीनता, गंभीरता व गरिमा बनाये रखनी होगी।
- (20) शास्त्रार्थ के दौरान विज्ञप्ति पर्याप्त, गुरु अथवा वक्ता के प्रति अमर्यादित भाषा अथवा शब्दों वा प्रयोग बर्जित होगा।
- (21) किसी टीम/वक्ता को दूसरी टीम/वक्ता से विवाद करने, आक्षेप अथवा अशोभनीय टीका-टिप्पणी करने की कदापि अनुमति नहीं रहेगी। ऐसा करने पर संचालक मण्डल प्रथम वार घेतावनी दे सकेगा और पुनरावृत्ति होने पर सम्बन्धित वक्ता अथवा टीम को कार्यक्रम स्थल से चले जाने के लिए कह सकेगा।
- (22) टीमें/वक्ता अपने द्वारा की गई किसी टीका टिप्पणी के लिए स्वयंवेधानिक रूप से उत्तरदायी होंगे, न कि आयोजक अथवा संचालक मण्डल।
- (23) किसी वक्ता का वक्तव्य अथवा प्रश्नोत्तर अच्छा लगाने पर श्रोता तथा दूसरी टीमों के सदस्यगण वक्ता की प्रशंसा में निर्भावित शब्द बोलकर वक्ता का उत्साहवर्धन कर सकेंगे:
- शोभनम्, शोभनम्
 - सुन्दरम्, सुन्दरम्
 - साधु, साधु
 - अति उत्तम, अति उत्तम
- (24) वक्ताओं की विद्वता व दक्षता का विनिश्चय पांच सदस्यीय निर्णायिक मण्डल द्वारा किया जायेगा। निर्णायिक मण्डल के वरिष्ठतम सदस्य निर्णायिक मण्डल के अध्यक्ष होंगे।
- (25) शास्त्रार्थ के दौरान प्रत्येक टीम की विद्वता व दक्षता का मूल्यांकन 100 पूर्णकों में किया जावेगा। निर्णायिक मण्डल के अध्यक्ष तथा प्रत्येक सदस्य के पास 20-20 अंक होंगे। पाँचों द्वारा दिए गए अंकों के योग के आधार पर निर्णायिक मण्डल द्वारा विजेता, उप विजेता एवं सांत्वना विजेता का निर्णय किया जावेगा जिसकी उद्घोषणा निर्णायिक मण्डल के अध्यक्ष अथवा उनके कहने पर अन्य सदस्य द्वारा किया जायेगा।
- (26) पाँच श्रेष्ठ वक्ताओं को वरीयता अनुसार प्रशासित-पत्र तथा शास्त्रार्थ ने प्रतिभाग करने वाले विद्वान वक्तव्यगण को भी प्रमाण-पत्र दिया जावेगा जो निर्णायिक मण्डल के अध्यक्ष एवं सदस्यगण द्वारा हस्ताक्षरित होगा। परिणाम की उद्घोषणा अध्यक्ष द्वारा शास्त्रार्थ कार्यक्रम के अन्त में किया जावेगा।
- (27) वक्तव्य के दौरान वक्ता को मोबाइल अथवा पुस्तकों आदि का उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी।
- (28) वक्तव्य के दौरान वक्ता को अपने पंथ, मत, सम्प्रदाय, गुरु आदि की प्रशंसा अथवा श्रेष्ठता सिद्ध करने के बजाय प्रवत्तित विषय/प्रश्न पर ही अपना वक्तव्य केन्द्रित करते हुए अपना वक्तव्य सख्ता होगा। परन्तु वक्ता अपने सम्प्रदाय, गुरु व उसकी किसी रचना से उद्घस्त आदि अपनी वात के समर्थन में दे सकेगा।
- (29) शास्त्रार्थ कार्यक्रम के प्रतिभागियों को संचालक मण्डल द्वारा किसी प्रकार का पारितोषिक, यात्रा व्यय अथवा धन आदि देय नहीं होगा अपितु शास्त्रार्थ कार्यक्रम में उनका प्रतिभाग पूर्णतः ऐसितक व धनापेक्षा के बिना होगा।
- (30) कार्यक्रम के अन्त में श्रोताओं की टिप्पणियाँ जानने के लिए 2-4 श्रोताओं से सम्पर्जन हुए शास्त्रार्थ पर 2-3 मिनट में उनके विद्यार्थ जानने के लिए निर्णायिक मण्डल उनसे कुछ बोलने हेतु आग्रह कर सकेगा।
- (31) शास्त्रार्थ कार्यक्रम की वीडियोग्राफी होगी जो प्रसारण हेतु समाधार-पत्रों व टेलीवीज़न घेनलों को भी सुलभ कराई जावेगी और उसकी सी.डी. बाद में प्रत्येक टीम को भी भेजी जावेगी।
- (32) शास्त्रार्थ कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागीगण एवं आमत्रित अतिथियों हेतु सूक्ष्म वैदिक जलपान तथा नमस्कार भोजन द्वारा व्यवस्था रहेगी।